वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 384
ISBN-978-93-82071-66-2

ज्ञानतीर्थ (शिर्डी) परिचय एवं पूजा

–मंगल प्रेरणा एवं आशीर्वाद –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

–प्रस्तुति –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 61वें त्यागदिवस के अवसर पर घोषित चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत ज्ञानतीर्थ-शिर्डी में पंचकल्याणक महोत्सव (15 से 20 मई 2013 तक) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2539	मूल्य
1100 प्रतियाँ	वैशाख शु. पंचमी, 15 मई 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
1.	तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ परिचय	1
2.	ज्ञानतीर्थ-शिर्डी का संक्षिप्त परिचय	7
3.	शिर्डी पार्श्वनाथ पूजन	10
4.	धरणेन्द्र-पद्मावती पूजन	16
5.	पद्मावती माता की पूजा	20
6.	श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र	25
7.	पार्श्वनाथ स्तुति	26
8.	श्री पद्मावती स्तोत्र (भाषा)	28
9.	शिरडी पंचकल्याणक-वार्ता	32
10.	पार्श्वनाथ चालीसा	34
11.	भजन (शिरडी के पारस प्रभू)	36
12.	भजन (शिरडी के पारस बाबा)	37
13.	भजन (शिरडी वाले पारस प्रभू)	38
14.	भजन (वंदना करूँ मैं प्रभू पार्श्वनाथ की)	39
15.	भजन (पारस प्रभु का मस्तकाभिषेक निराला)	40
16.	भजन (धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है)	41
17.	भजन (ज्ञान तीर्थ के पंचकल्याण का स्वर्णिम अवसर आया)	42
18.	भजन (भारत के जैनी वीरों)	43
19.	भजन (शाश्वत है तीरथ मेरा)	44
20.	पार्श्वनाथ भगवान की आरती	45
21.	ज्ञानतीर्थ की आरती	46
22.	धरणेन्द्र देव की आरती	47
23.	पद्मावती माता की आरती	48

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जिस प्रकार जब कोई बीज आरोपित किया जाता है, तो धीरे-धीरे वह एक विशाल वृक्ष का रूप धारण कर लेता है, उसी प्रकार महाराष्ट्र प्रान्त के अंतर्राष्ट्रीय स्थल के रूप में विख्यात शिर्डी क्षेत्र पर जब ''ज्ञानतीर्थ'' नाम से एक जैन तीर्थ निर्माण की योजना बनाई गई, तब से लेकर शनैः शनैः वह तीर्थ आज साकाररूप में देश के सामने आ गया है, अब इस 'ज्ञानतीर्थ'' के माध्यम से जैनत्व को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति अवश्य प्राप्त होगी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

श्री राजेन्द्र जी जैन (राजाभाऊ) पाटनी आदि महानुभावों के विशेष आग्रह से मुझे इस तीर्थ पर कई बार जाने का अवसर मिला, मैंने अनुभव किया कि महाराष्ट्र प्रान्त के भक्तों में पूज्य ज्ञानमती माताजी के प्रति विशेष भक्तिभावना है। इस तीर्थ के निर्माण में औरंगाबाद, कोपरगांव, नासिक आदि अनेक स्थानों के श्रद्धालु भक्तों ने यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप तीर्थ अपने विकसित रूप में उभरकर सभी के समक्ष स्थापित हुआ है।

4 दिसम्बर 2011 को जब इस तीर्थ पर निर्मित होने वाले जिनमंदिर का शिलान्यास मेरे सान्निध्य में सम्पन्न हुआ, उस समय भक्तों की भक्ति-भावना को देखकर मुझे अत्यन्त आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति हुई तथा मैंने यह भी अनुभव किया कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में इस बात की निश्चित धारणा थी कि पूज्य ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा जिस कार्य में होती है वह कार्य शीघ्र ही पूर्ण होता है अतः शिर्डी में निर्मित हो रहा यह ''ज्ञानतीर्थ'' भी शीघ्र ही निर्मित होकर जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र बनेगा।

पूरे भारतवर्ष में सर्वाधिक तीर्थ अथवा मंदिर भगवान पार्श्वनाथ के नाम से हैं, इसी शृँखला में एक नवीन कड़ी के रूप में इस तीर्थ का भी नाम जुड़ गया है। इस तीर्थ पर विराजित भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा विशेष चमत्कारी हैं। जिस दिन से भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा इस तीर्थ पर आईं, उस दिन से प्रायः एक सर्प आकर भगवान की प्रदक्षिणा लगाकर चुपचाप वापस चला जाता है। वहाँ निर्मित होने वाला सुन्दर कमलाकार जिनमंदिर तीर्थ का विशेष आकर्षण रहेगा।

इस प्रकार यह तीर्थ असंख्य भव्य प्राणियों को सम्यग्दर्शन की प्राप्ति कराने में निमित्त बने, यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

हर दिन नया तेरे जीवन का होता है।
नित्य नई निर्माण प्रेरणा देता है।।

पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की भक्ति में लिखी गई ये पंक्तियाँ वास्तव में सार्थक दिखाई देती हैं। पूज्य माताजी का व्यक्तित्व ही ऐसा है कि वह भक्तों को नित्य नूतन निर्माण की प्रेरणा प्रदान करता है। लोग चाहते तो बहुत हैं कि हम ज्ञानमती माताजी के नाम से कई तीर्थ बना दें परन्तु माताजी हमेशा यही कहती हैं कि आपको जो कुछ भी करना है, भगवान के नाम से करो। इसीलिए ज्ञानतीर्थ के लिए कार्यकर्ताओं द्वारा आशीर्वाद मांगने पर पूज्य माताजी ने कहा कि केवलज्ञानी भगवान पार्श्वनाथ का तीर्थ बनाओ, उस तीर्थ के माध्यम से ज्ञान का प्रकाश सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा। पुनः उन्होंने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा कमलाकार मंदिर में विराजमान करने की प्रेरणा प्रदान की तथा साथ में पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने भी उनके उत्साह को बढ़ाते हुए कहा-''आप तीर्थ बनाइए, पूरा हस्तिनापुर आपके साथ है।''

धीरे-धीरे कार्य की गति आगे बढ़ी, राजाभाऊ पाटनी जी ने इस कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारी ली तथा इस कार्य में औरंगाबाद के एडवोकेट (स्व.) जम्मनलाल जी कासलीवाल और अभय कुमार जी कासलीवाल ने भी पूरी रुचि से भाग लिया।

शिर्डी में विराजमान भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट पद्मासन प्रतिमा दिल्ली के श्रेष्ठी संघपति श्री महावीर प्रसाद जी के सौजन्य से स्थापित हुई हैं।

पुनः समय बीतते-बीतते सन् 2011 के पर्यूषण पर्व में औरंगाबाद के श्री राजमल जी कासलीवाल के माध्यम से श्री सुभाषचंद जी साहू (जालना-महा.) पूज्य माताजी के दर्शनार्थ आए, उन्हें जब इस प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी गई, तब उन्होंने वहाँ अतिथि भवन के शिलान्यास हेतु स्वीकृति प्रदान की तथा राजाभाऊ पाटनी परिवार को कमल मंदिर का शिलान्यास करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

यूँ तो पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का अधिकतम समय

मांगीतुंगी-प्रयाग-कुण्डलपुर-काकंदी-अयोध्या आदि तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन में व्यतीत होता है फिर भी सभी के विशेष आग्रह से उन्होंने इस कार्य में भी अपना अमूल्य निर्देशन प्रदान किया और मई 2013 में इसका पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव निश्चित कर दिया।

प्रस्तुत पुस्तक ''ज्ञान तीर्थ (शिर्डी) परिचय एवं पूजा'' में पूज्य चंदनामती माताजी द्वारा लिखित शिर्डी के पार्श्वनाथ भगवान की बहुत ही सुन्दर पूजन प्रकाशित है तथा पद्मावती माता की पूजन और धरणेन्द्र देव एवं पद्मावती माता की सम्मिलित पूजन है, इसके साथ ही इसमें शिर्डी के भगवान पार्श्वनाथ एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से संबंधित अनेक भजन हैं।

इस पुस्तक के माध्यम से आपको शिर्डी में निर्मित ''ज्ञानतीर्थ'' की एवं वहाँ विराजित भगवान पार्श्वनाथ की महिमा से परिचित होने का सुअवसर प्राप्त होगा कि किस प्रकार वहाँ एक सर्प प्रतिदिन आकर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा की प्रदक्षिणा लगाता है और बिना किसी को हानि पहुँचाए अपने स्थान पर चला जाता है।

यह बात पूर्णतया निश्चित है कि अंतर्राष्ट्रीय स्थल पर निर्मित इस तीर्थ के माध्यम से जैनधर्म की ख्याति सम्पूर्ण विश्व में अवश्य फैलेगी तथा भगवान पार्श्वनाथ के क्षमा, सहिष्णुता, सहनशीलता आदि गुणों से जन-जन को परिचित होने का सुअवसर भी प्राप्त होगा।

आप सभी को अपने जीवन में कम से कम एक बार शिर्डी जाकर इस अनूठे ''ज्ञानतीर्थ'' का दर्शन अवश्य करना चाहिए तथा इससे प्राप्त हो रहे ज्ञान के आलोक से अपने तन-मन को अवश्य प्रकाशित करना चाहिए।

यह तीर्थ सभी के लिए वरदान बने, यही मंगलभावना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। **नाम–** क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएँ एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण– जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा– हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?– भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यीय बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

तेईसवें तीर्थंकर
भगवान पार्श्वनाथ का परिचय

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में एक सुरम्य नाम का बड़ा भारी देश है। उसके पोदनपुर नगर में अतिशय धर्मात्मा अरविन्द राजा राज्य करते थे। उसी नगर में विश्वभूति ब्राह्मण की अनुन्धरी ब्राह्मणी से उत्पन्न हुए कमठ और मरूभूति नाम के दो पुत्र थे जोकि क्रमशः विष और अमृत से बनाये हुए के समान मालूम पड़ते थे। कमठ की स्त्री का नाम वरूणा तथा मरूभूति की स्त्री का नाम वसुन्धरा था।

एक समय किसी राज्यकार्य से मरूभूति बाहर गया था तब कमठ मरूभूति की स्त्री वसुन्धरा के साथ व्यभिचारी बन गया। राजा अरविंद को यह बात पता चलते ही उन्होंने उस कमठ को दण्डित करके देश से निकाल दिया। वह कमठ भी मानभंग से दुःखी होकर किसी तापस आश्रम में जाकर हाथ में पत्थर की शिला लेकर कुतप करने लगा। भाई के प्रेम के वशीभूत हो मरूभूति भी कमठ को ढूंढ़ता हुआ उधर चल पड़ा। उसे आते देख क्रोध के आवेश में आकर कमठ ने वह हाथ की शिला उसके सिर पर पटक दी जिससे मरूभूति मरकर सल्लकी वन में वज्रघोष नाम का हाथी हो गया।

किसी समय अरविन्द ने विरक्त होकर राज्य छोड़ दिया और संयम धारणकर सब संघ की वंदना के लिये प्रस्थान किया। चलते-चलते वे उसी वन में पहुँचकर सामायिक के समय प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। वह हाथी संघ में हाहाकार करता हुआ अरविन्द महाराज के सन्मुख आकर मारने के लिए दौड़ा, तत्क्षण ही उनके वक्षस्थल में वत्स के चिन्ह को देखते ही उसे पूर्व

भव संबंध का स्मरण हो आया तब वह पश्चाताप से शांत होता हुआ चुपचाप खड़ा रहा। अनंतर अरविन्द मुनिराज ने उसे धर्मोपदेश देकर श्रावक के व्रत ग्रहण करा दिये।

उस समय से वह हाथी पाप से डर कर दूसरे हाथियों द्वारा तोड़ी हुई वृक्ष की शाखाओं और सूखे पत्तों को खाने लगा। पत्थरों के गिरने से अथवा हाथियों के समूह के संघटन से जो पानी प्रासुक हो जाता था उसे ही वह पीता था तथा प्रोषधोपवास के बाद पारणा करता था। इस प्रकार चिरकाल तक महान तपश्चरण करता हुआ वह हाथी अत्यन्त दुर्बल हो गया। किसी दिन वह हाथी पानी पीने के लिए वेगवती नदी के किनारे गया और कीचड़ में गिरकर फँस गया, निकल नहीं सका। वहाँ पर दुराचारी कमठ का जीव मरकर कुक्कुट सर्प हुआ था उसने पूर्व वैर के संस्कार से उसे काट खाया जिससे वह हाथी महामंत्र का स्मरण करते हुए मरकर बारहवें स्वर्ग में देव हो गया। इधर वह सर्प पाप से मरकर तीसरे नरक चला गया।

जंबूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में पुष्कलावती देश है उसके विजयार्ध पर्वत पर त्रिलोकोत्तम नगर में राजा विद्युत्गति राज्य करते थे। वह देव का जीव वहाँ से च्युत होकर राजा की विद्युन्माला रानी से रश्मिवेग नाम का पुत्र हो गया। रश्मिवेग ने युवावस्था में समाधिगुप्त मुनिराज के पास दीक्षा लेकर महासर्वतोभद्र आदि श्रेष्ठ उपवास किये। किसी समय हिमगिरि पर्वत की गुफा में योग धारण कर विराजमान थे कि कुक्कुट सर्प का जीव जो नरक से निकल कर अजगर हुआ था उसने निगल लिया। मुनि का जीव मरकर सोलहवें स्वर्ग में देव हुआ और कालांतर में अजगर मरकर छठे नरक चला गया।

जंबूद्वीप के पूर्व विदेह सम्बन्धी पद्मादेश में अश्वपुर नगर है। वहाँ के राजा वज्रवीर्य और रानी विजया के वह स्वर्ग का देव मरकर वज्रनाभि नाम का पुत्र हुआ। वह पुण्यशाली वज्रनाभि चक्रवर्ती के पद का भोक्ता हो गया, अनंतर किसी समय विरक्त होकर साम्राज्य वैभव का त्यागकर क्षेमंकर गुरू के समीप जैनेश्वरी दीक्षा ले ली। कमठ का जीव, जो कि अजगर की पर्याय में मरकर छठे नरक गया था वह कुरंग नाम का भील हो गया था। किसी दिन तपस्वी चक्रवर्ती वन में आतापन योग ये विराजमान थे, उन्हें देखकर उस भील का वैर भड़क उठा, उसने मुनिराज पर भयंकर उपसर्ग किए। मुनिराज आराधनाओं की आराधना से मरण कर मध्यम ग्रैवेयक में श्रेष्ठ अहमिन्द्र हो गए तथा वह पापी भील आयु पूरी

करके पाप के भार से पुनः नरक चला गया।

जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र में कौशलदेश सम्बन्धी अयोध्या नगरी में काश्यपगोत्री इक्ष्वाकुवंशी राजा वज्रबाहु राज्य करते थे। उनकी रानी प्रभंकरी थी वह अहमिन्द्र च्युत होकर रानी के गर्भ से आनंद नाम का आनंददायी पुत्र हो गया। वह बड़ा होकर मंडलेश्वर राजा हुआ। किसी दिन आनंद राजा ने महामंत्री के कहने से आष्टान्हिक महापूजा कराई जिसे देखने के लिए विपुलमति नाम के मुनिराज पधारे। आनंदराज ने उनकी वंदना पूजा आदि करके उनसे पूछा कि हे भगवन्! जिनेन्द्र प्रतिमा अचेतन है उसकी पूजा से पुण्यबंध कैसे होता है? मुनिराज ने कहा यद्यपि प्रतिमा अचेतन है तो भी महान पुण्य का कारण है जैसे चिंतामणि रत्न, कल्पवृक्ष आदि अचेतन होकर मनचिंतित और मनचाहे फल देते हैं वैसे ही प्रतिमाओं की वंदना पूजा आदि से जो शुभ परिणाम होते हैं उनसे सातिशय पुण्य बंध हो जाता है इत्यादि प्रकार से वीतराग प्रतिमा का वर्णन करते हुए मुनिराज ने राजा के सामने तीन लोक सम्बन्धी अकृत्रिम चैत्यालयों का वर्णन करना शुरू किया। उसमें प्रारम्भ में ही सूर्य के विमान में स्थित जिनमंदिर की विभूति का अच्छी तरह वर्णन किया। उस असाधारण विभूति को सुनकर राजा आनन्द को बहुत ही श्रद्धा हो गई। उस दिन से वह प्रतिदिन हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर सूर्य विमान में स्थित जिनप्रतिमाओं की स्तुति करने लगा। उसने कारीगरों द्वारा मणि और सुवर्ण का एक सूर्य विमान बनवाकर उसके भीतर जिनमन्दिर बनवाया। अनन्तर शास्त्रोक्त विधि से आष्टान्हिक, चतुर्मुख, रथावर्त, सर्वतोभद्र और कल्पवृक्ष इन नाम वाली पूजाओं का 'अनुष्ठान' किया।

''उस राजा को इस तरह सूर्य की पूजा करते देखकर उसकी प्रामाणिकता से अन्य लोग भी स्वयं भक्तिपूर्वक सूर्यमंडल की स्तुति करने लगे। आचार्य कहते हैं कि इस लोक में उसी समय से सूर्य की उपासना चल पड़ी है।''

किसी दिन आनन्द राजा ने अपने सिर पर एक सफेद बाल देखा तत्क्षण विरक्त होकर पुत्र को राज्य वैभव देकर समुद्रगुप्त मुनिराज के पास अनेक राजाओं के साथ दीक्षित हो गये। उन्होंने ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और सोलहकारण भावनाओं के चिंतवन से तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया। आयु के अंत समय वे धीर-वीर शांतमना मुनिराज प्रायोपगमन संन्यास लेकर ध्यान में लीन थे। पूर्व जन्म के कमठ का जीव नरक से निकलकर वहीं सिंह हुआ था। सो उसने आकर उन मुनि का कण्ठ पकड़ लिया। सिंहकृत उपसर्ग से विचलित

नहीं होने वाले वे मुनिराज मरणकर अच्युत (सोलहवें) स्वर्ग के प्राणत नामक विमान में इन्द्र हो गए। वहाँ पर उनकी आयु बीस सागर की थी, साढ़े तीन हाथ ऊँचा शरीर था। वे वहाँ दिव्य सुखों का अनुभव कर रहे थे। उधर सिंह का जीव भी आयु पूरी करके मरकर नरक चला गया और वहाँ के भयंकर दुःखों का चिरकाल तक अनुभव करता रहा।

गर्भावतार—इस जंबूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें काश्यप गोत्री राजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम वामा देवी था। जब उन सोलहवें स्वर्ग के इन्द्र की आयु छह मास की अवशेष रह गई थी तब इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने माता के आँगन में रत्नों की धारा बरसाना शुरू कर दी थी। रानी वामा देवी ने सोलहस्वप्नपूर्वक वैशाख कृष्णा द्वितीया के दिन इन्द्र के जीव को गर्भ में धारण किया था।

नवमास पूर्ण होने पर पौष कृष्णा एकादशी के दिन पुत्र का जन्म हुआ था। इन्द्रादि देवों ने सुमेरू पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्श्वनाथ' यह नामकरण किया था। श्री नेमिनाथ के बाद तिरासी हजार सात सौ पचास वर्ष बीत जाने पर इनका जन्म हुआ था। इनकी आयु सौ वर्ष की थी जोकि इसी अंतराल में सम्मिलित है। प्रभु की कांति हरितवर्ण की एवं शरीर की ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी। ये उग्रवंशी थे।

सोलह वर्ष बाद नवयौवन से युक्त भगवान किसी समय क्रीडा के लिये अपनी सेना के साथ नगर के बाहर गये। कमठ का जीव जो कि सिंह पर्याय से नरक गया था वह वहाँ से आकर महीपाल नगर का महीपाल नाम का राजा हुआ था। उसी की पुत्री वामा देवी भगवान पार्श्वनाथ की माता थीं। यह राजा (भगवान के नाना) किसी समय अपनी पत्नी के वियोग में तपस्वी होकर वहीं आश्रम के पास वन में पंचाग्नियों के बीच में बैठा तपश्चरण कर रहा था। देवों द्वारा पूज्य भगवान उसके पास जाकर उसे नमस्कार किये बिना ही खड़े हो गये। यह देखकर वह खोटा साधु क्रोध से युक्त हो गया और सोचने लगा ''मैं कुलीन हूँ, तपोवृद्ध हूँ और इसका नाना हूँ'' फिर भी इस अज्ञानी कुमार ने अहंकारवश मुझे नमस्कार नहीं किया है, क्षुभित हो उसने अग्नि में लकड़ियों को डालने के लिए पड़ी हुई लकड़ी को काटने हेतु अपना फरसा उठाया, इतने में ही अवधिज्ञानी भगवान पार्श्वनाथ ने कहा, ''इसे मत काटो'' इसमें जीव हैं किन्तु मना करने पर भी उसने लकड़ी काट ही डाली, तत्क्षण ही उसके भीतर रहने वाले सर्प और

सर्पिणी निकल पड़े और घायल हो जाने से छटपटाने लगे।

यह देखकर प्रभु के साथ स्थित सुभौमकुमार ने कहा कि तू अहंकारवश यह कुतप करके ताप का ही आस्रव कर रहा है। सुभौम के वचन सुन तपस्वी क्रुधित होकर अपने तपश्चरण की महत्ता प्रकट करने लगा। तब सुभौमकुमार ने अनेक युक्तियों से उसे समझाया कि सच्चे देव, शास्त्र और गुरू के सिवाय कोई हितकारी नहीं है। जिनधर्म में प्रणीत सच्चे तपश्चरण से ही कर्म निर्जरा होती है। यह मिथ्यातप, जीव हिंसा सहित होने से कुतप ही है। यद्यपि वह तापसी समझ तो गया किन्तु पूर्व बैर का संस्कार होने से अपने पक्ष के अनुराग से अथवा दुःखमय संसार के कारण से अथवा स्वभाव से ही दुष्ट होने से उसने स्वीकार नहीं किया प्रत्युत् यह सुभौमकुमार अहंकारी होकर मेरा तिरस्कार कर रहा है ऐसा समझ वह भगवान पार्श्वनाथ पर अधिक क्रोध करने लगा। इसी शल्य से मरकर 'शम्बर' नाम का ज्योतिषी देव हो गया।

इधर सर्प और सर्पिणी कुमार के उपदेश से शांतभाव को प्राप्त हुए तथा मरकर बड़े ही वैभवशाली धरणेन्द्र और पद्मावती हो गये।

अनंतर भगवान जब तीस वर्ष के हो गये तब एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन ने उत्तम घोड़ा आदि की भेंट के साथ अपना दूत भगवान पार्श्वनाथ के समीप भेजा। भगवान ने भेंट लेकर उस दूत से अयोध्या की विभूति पूछी। उत्तर में दूत ने सबसे पहले भगवान ऋषभदेव का वर्णन किया पश्चात् अयोध्या का हाल कहा। उसी समय ऋषभदेव के सदृश अपने को तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध हुआ है, ऐसा सोचते हुए भगवान गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गये और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए। प्रभु देवों द्वारा लाई गई विमला नाम की पालकी पर बैठकर अश्ववन में पहुँच गये। वहाँ तेला का नियम लेकर पौष कृष्णा एकादशी के दिन प्रातः काल के समय सिद्ध भगवान को नमस्कार करके प्रभु तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गये।

पारणा के दिन गुल्मखेट नगर के धन्य नामक राजा ने अष्ट मंगलद्रव्यों से प्रभु का पड़गाहन कर आहारदान देकर पंचाश्चर्य प्राप्त कर लिये। छद्मस्थ अवस्था के चार मास व्यतीत हो जाने पर भगवान देवदारू वृक्ष के नीचे विराजमान होकर ध्यान में लीन हो गये। इसी समय कमठ का जीव शम्बर ज्योतिषी आकाशमार्ग से जा रहा था, अकस्मात् उसका विमान रूक गया, उसे विभंगावधि से पूर्व का बैर बंध स्पष्ट दिखने लगा। फिर क्या था, क्रोधवश उसने

महागर्जना, महावृष्टि, भयंकर वायु आदि से महा उपसर्ग करना प्रारम्भ कर दिया, बड़े-बड़े पहाड़ तक लाकर समीप में गिराये, इस प्रकार उसने सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया।

अवधिज्ञान से यह उपसर्ग जानकर धरणेन्द्र अपनी भार्या पद्मावती के साथ पृथ्वी तल से बाहर निकला। उन्होंने भगवान को सब ओर से घेर कर अपने फणाओं के ऊपर उठा लिया। आचार्य कहते हैं देखो! स्वभाव से ही क्रूर प्राणी इन सर्प सर्पिणी ने अपने ऊपर किये गये उपकार को याद रखा सो ठीक ही है क्योंकि सज्जन पुरूष अपने ऊपर किये हुए उपकार को कभी नहीं भूलते हैं।

तदनंतर ध्यान के प्रभाव से प्रभु का मोहनीय कर्म क्षीण हो गया इसलिए बैरी कमठ का सब उपसर्ग दूर हो गया। मुनिराज पार्श्वनाथ ने चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। उसी समय इन्द्रों ने आकर समवसरण की रचना करके केवलज्ञान की पूजा की। शंबर नाम का देव भी का काललब्धि पाकर उसी समय शांत हो गया और उसने सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। यह देख, उस वन में रहने वाले सात सौ तपस्वियों ने मिथ्यादर्शन छोड़कर संयम धारण कर लिया, सभी शुद्ध सम्यग्दृष्टि हो गये और बड़े आदर से प्रदक्षिणा देकर भगवान की स्तुति भक्ति की। तभी से वह स्थान 'अहिच्छत्र' नाम से तीर्थ बन गया। आचार्य कहते हैं कि पापी कमठ के जीव का कहां तो निष्कारण वैर और कहां ऐसी पार्श्वनाथ की शांति! इसलिए संसार के दुःखों से भयभीत प्राणियों को वैर विरोध का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए।

भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण में स्वयंभू को आदि लेकर दस गणधर थे, सोलह हजार मुनिराज, सुलोचना को आदि लेकर छत्तीस हजार आर्यिकायें, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकायें थीं। इस प्रकार बारह सभाओं को धर्मोपदेश देते हुए भगवान ने पाँच मास कम सत्तर वर्ष तक विहार किया। अंत में आयु का एक माह शेष रहने पर विहार बंद हो गया। प्रभु पार्श्वनाथ सम्मेदाचल के शिखर पर छत्तीस मुनियों के साथ प्रतिमायोग से विराजमान हो गये। श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन प्रातःकाल के समय विशाखा नक्षत्र में सिद्धपद को प्राप्त हो गये। इन्द्रों ने आकर मोक्ष कल्याणक उत्सव मनाया। ऐसे पार्श्वनाथ भगवान हमें भी सम्पूर्ण प्रकार के उपसर्गों को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

ज्ञानतीर्थ-शिर्डी का संक्षिप्त परिचय

-जीवन प्रकाश जैन, प्रबंध सम्पादक

महाराष्ट्र प्रान्त में नये रूप में उभरे ज्ञानतीर्थ-शिर्डी का नाम इतनी शीघ्रता से लोगों के मुँह पर आ जाएगा, इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था। मैंने इस तीर्थ के उद्भव के विषय में जब ज्ञान किया तो पता चला कि इसके पीछे किनका समर्पित योगदान है।

महिलाओं के उत्थान के लिए कार्यरत एक कोपरगांव की संस्था है– अरिहंत महिला प्रतिष्ठान! शुरुआत में सु.श्री. विशल्याताई गंगवाल इस संस्था का तन्मयता के साथ देखभाल करती थी। प्रतिष्ठान की महिलाओं ने प्रकर्षता से अनुभव किया कि कोपरगांव-शिर्डी रोड पर हर धर्म का मंदिर बना हुआ है किन्तु से अंतर्राष्ट्रीय स्थान पर केवल जैनधर्म का मंदिर नहीं था। अपना जैनधर्म का झण्डा भी यहाँ लहराए, कुछ न कुछ यहाँ बने, इन भावनाओं से चिंता में थे।

एक दिन सु. श्री विशल्याताई गंगवाल, श्रीमती प्रेमाबाई जी बज और कुछ महिलाएँ नासिक के श्री राजेन्द्र कृमार पाटणी (राजाभाऊ जी पाटणी) के पास इस प्रोजेक्ट को लेकर आये और उनसे कहा कि आप केवल अपनी ओर से इंजीनियरिंग और आर्किटेक्ट्स की सर्विस दें। उन्होंने यह मंजूर कर लिया। यह बात सन् 2001 की है। इसके बाद सभी सदस्य 5-6 बार राजाभाऊ जी के पास आए और 'आप ही प्रोजेक्ट आगे बढ़ावें' ऐसा कहा। राजाभाऊ जी का हस्तिनापुर से विशेष संबंध सन् 1994-1995 था। परमपूज्य ज्ञानमती माताजी को राजाभाऊ जी ने अपना मूल गुरु माना है। गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र के वे सक्रिय सदस्य हैं। उन्होंने अरिहंत महिला प्रतिष्ठान के श्रीमती विशल्याताई गंगवाल और प्रेमाबाई जी बज की इस बात को दिशा देने का मन बना लिया। उनके सामने सर्वप्रथम माताजी का चेहरा सामने आया। मन में यह विश्वास हो रहा था कि माताजी जरूर इस बात को योग्य महत्व देंगी। योगायोग से सन् 2002 में ज्ञानमती भक्तमण्डल की ओर से माताजी के उपदेश एवं प्रेरणा बने हुए प्रयाग तीर्थक्षेत्र पर राजाभाऊ पाटणी परिवार द्वारा पर्यूषण पर्व में ''इन्द्रध्वज विधान'' करने का निश्चित हुआ। तभी पाटणी जी ने मन में यह निश्चय कर लिया कि माताजी के सामने शिर्डी प्रोजेक्ट रखा जाये। उन्होंने अरिहंत महिला प्रतिष्ठान के प्रेमाबाई जी बज से संपर्क करके योजना बताई। उन्होंने भी पुत्र श्री

ओमप्रकाश जी बज के साथ चर्चा करके उनको राजाभाऊ जी के साथ प्रयाग भेज दिया। माताजी के साथ प्रयाग में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी और क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी भी थे। उनके सामने ही पूज्य माताजी से चर्चा हुई। चंदनामती माताजी ने कहा, ''बनाओ, बनाओ, पूरा हस्तिनापुर आपके साथ है।''

भारतवर्ष में तीर्थों के विकास की शृँखला पूज्य माताजी के निर्देशन में अविरल चल रही है। एक पूरा होते-होते ही दूसरे की नींव पड़ जाती है किन्तु माताजी के नाम का कोई तीर्थ नहीं बना। स्वयं माताजी भी इस पक्ष में नहीं है, लेकिन भक्तों के स्नेह-भक्ति की जीत हुई और ''ज्ञानतीर्थ'' यह सार्थ नाम से यह तीर्थ बन रहा है। ''पूरा हस्तिनापुर आपके साथ है''। ये मार्मिक शब्द बेहद सही साबित हुए। यह छत्रछाया हमेशा ही प्रेरणा व बल प्रदान करती रही। पहले तो माताजी के आशीर्वाद से सावली विहीर नासिक रास्ते के कॉर्नर पर जगह का चयन हुआ। जमीन मालिक के साथ चर्चा करके एग्रीमेंट करना निश्चित हुआ, लेकिन उसे उस समय तीन लाख रुपये उसी दिन देना था। फिर परीक्षा की घड़ी आई। फिर माताजी का स्मरण और आशीर्वाद काम आये। उनके प्रभाव से श्री फूलचंद जी पाण्डे-कोपरगांव सामने आ गये। उन्होंने तुरंत ही तीन लाख रुपये दे दिये और एग्रीमेंट हो गया।

धीरे-धीरे ट्रस्टी बनाने का काम राजाभाऊ जी ने शुरू किया। हर ट्रस्टी से एक लाख रुपये लेना तय हुआ। इस काम में अभयकुमार जी कासलीवाल और विशेषतः जम्मनलाल जी कासलीवाल इन्होंने तन-मन-धन से यह प्रोजेक्ट खड़ा करने की ठान ली। इस प्रकार प्रोजेक्ट आगे बढ़ता गया। सन् 2004 में एक एकड़ जमीन खरीद ली गई। कुछ दिन बाद थोड़ी जमीन उससे ही और ली गई।

सन् 2005 में माताजी के परमभक्त संघपति लाला श्री महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली की ओर से भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट पद्मासन प्रतिमा शिर्डी पहुँच गई।

समय बीतता गया। पूज्य माताजी से इस प्रोजेक्ट को हाथ में लेने की विनती बार-बार की जा रही थी किन्तु उन्होंने कहा हमें प्रथम मांगीतुंगी जी का प्रोजेक्ट पूरा करना है। फिर भी हम प्रयास करते रहेंगे। दोनों साथ-साथ चलेंगे।

सन् 2011 का पर्यूषण पर्व आ गया। राजाभाऊ जी परिवार के साथ हस्तिनापुर गये थे। वहाँ औरंगाबाद के श्री राजमल जी कासलीवाल के माध्यम से श्री सुभाषचंद जी केशरचंद जी साहू जी-जालना वालों से भेंट हुई। उनसे

अतिथी भवन का शिलान्यास करने को कहा, उन्होंने मंजूर किया। माताजी की आज्ञा से कमल मंदिर की जिम्मेदारी भाई जी कर्मयोगी श्री रविन्द्र कुमार जी ने राजाभाऊ जी-पाटणी परिवार को दे दी। पाटणी परिवार ने भी उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया।

उनके सुपुत्र इंजी. श्री महावीर कुमार पाटणी एवं आर्किटेक्ट, श्री संजय जी के निर्देशन में एक सुंदर कमल मंदिर आकार लेने जा रहा है। एक ऐसा तीर्थ जो कि न केवल जैनीभाई किन्तु हर भारतीय के लिए प्रेरणादायी होगा। शिर्डी में आने वाले जैन-अजैन हर यात्री इस तीर्थ के दर्शन करके जैनधर्म की महिमा जान सकेंगे।

ज्ञानतीर्थ प्रोजेक्ट की नये उमंग से तैयारी शुरू हुई। सन् 2011 में 4 दिसम्बर को शिलान्यास का मुहूर्त निश्चित हुआ। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के नये पीठाधीश स्वस्तिश्री रविन्द्रकीर्ति जी स्वामी जी के निर्देशन में ज्ञानतीर्थ स्थल पर बहुत ही भव्यता से 'शिलान्यास समारोह'' सम्पन्न हुआ। पारस चैनल के माध्यम से सीधा प्रसारण किया गया। सम्पूर्ण भारतवर्ष में ज्ञानतीर्थ परिचय को प्राप्त हुआ। आसपास के साधर्मी बंधुओं को ज्ञानतीर्थ साकार होता हुआ नजर आने लगा। भावनाएँ जुड़ती गईं। कारवां बढ़ता गया। माताजी एवं संघ की प्रेरणा और निर्देशन में दि. 15 मई 2013 से 20 मई 2013 के शुभमुहूर्त पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक सम्पन्न होने जा रहा है।

भविष्य में यह तीर्थ आकाश की ऊँचाइयों को छुए और इस तीर्थ के दर्शन करके सम्यग्दर्शन की प्राप्ति करें, यही भगवान पार्श्वनाथ से मंगल प्रार्थना है।

शिर्डी पार्श्वनाथ पूजन

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (शंभु छंद)

तेइसवें जिनवर पार्श्वनाथ, उपसर्गविजयि कहलाते हैं।
इनकी पूजन से भक्तों के, उपसर्ग दूर हो जाते हैं।।
ये कालसर्प का योग नष्ट कर, सबको सुखी बनाते हैं।
चिन्तामणि पारसनाथ की महिमा, इसीलिए हम गाते हैं।।1।।

-दोहा-

शिर्डी के पारस प्रभू, का कर लूँ आह्वान।
स्थापन सन्निधिकरण, कर पूजूँ भगवान।।2।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (नंदीश्वर चाल)

गंगा का प्रासुक नीर, कलश में भर करके।
हो जाऊँ भवदधि तीर, प्रभु पूजन करके।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।1।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर कर्पूर सुगंध, घिस करके लाया।
पारसप्रभु पद में चर्च, आतम सुख पाया।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।2।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम धवल सुपुञ्ज, प्रभु पद में अर्पूं।
मिल जावे अक्षय पुंज, निज सुख में रम लूँ।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।3।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले विविध कुसुम की माल, पूजन को आया।
विषयाशा होवे शान्त, ऐसा मन भाया।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।4।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य थाल भर लाय, जिनवर को पूजूँ।
मम क्षुधाव्याधि नश जाय, भवदुख से छूटूँ।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।5।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक थाल सजाय, प्रभु आरति कर लूँ।
मम मोहतिमिर नश जाय, ज्ञानप्रभा भर लूँ।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।6।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सम्मुख धूप जलाय, कर्म दहन कर लूँ।
पूजन का शुभ फल पाय, आतमसुख वर लूँ।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।7।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेब बादाम, फल का थाल लिया।
मिल जावे शिवसुख धाम, ऐसा मान लिया।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।8।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

धरूँ अष्टद्रव्य का थाल, प्रभु पारस के पद।
''चन्दनामती'' तत्काल, पाऊँ पूजन फल।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।9।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जल की झारी हाथ, शान्तीधार करूँ।
मिल जावे आतमशान्ति, ऐसा भाव करूँ।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।10।।

शान्तये शांतिधारा।

ले बेला पुष्प गुलाब, पुष्पांजलि कर लूँ।
हो आत्मगुणों का लाभ, भौतिक सुख वर लूँ।।
शिरडी के पारसनाथ, हैं अतिशयकारी।
इन पूजत भव्य सनाथ, हों गुणभण्डारी।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

वैशाख वदी दुतिया को पारस-नाथ गर्भ में आये थे।
वाराणसि में वामा माता को, सोलह स्वप्न दिखाये थे।।

धनपति ने छह महिने पहले से, रत्न बहुत बरसाये थे।
उस गर्भकल्याणक को पूजूँ, जिसे इन्द्र मनाने आये थे।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ मंजिल ऊँचे वैजयंत, महलों में बजी बधाई थी।
थी पौष वदी ग्यारस तिथि जब, वामा माता हर्षाई थीं।।
पितु अश्वसेन का कोष खुला, इन्द्रों की टोली आई थी।
जन्माभिषेक मेरू पर कर, सबके मन खुशियाँ छाई थीं।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृषभेश्वर नगरि अयोध्या से, इक राजदूत जब आया था।
उससे नगरी का वैभव सुन, मन में वैराग्य समाया था।।
बन गये बालयति पौष वदी-ग्यारस को ही पारसप्रभु जी।
उस ही क्षण इन्द्रों ने आकर, दीक्षाकल्याणक पूजन की।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठोपसर्गविजयी पारसप्रभु, को अहिच्छत्र में ज्ञान हुआ।
बस चैत्रवदी सुचतुर्थी नभ में, समवसरण निर्माण हुआ।।
प्रभु की दिव्यध्वनि सुन करकेउस कमठ का भी कल्याण हुआ।
उस ज्ञानकल्याणक की पूजन से, मुझमें भी श्रुतज्ञान हुआ।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप करते करते पार्श्वनाथ, सम्मेदशिखर पर पहुँच गये।
वहाँ स्वर्णभद्र की टोंक से कर्मों, को नाशा शिव पहुँच गये।।
श्रावणशुक्ला सप्तमि तिथि को, सब मोक्षकल्याण मनाते हैं।
प्रभु पार्श्वनाथ के तीर्थों पर, लाडू निर्वाण चढ़ाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानतीर्थ का अर्घ्य

जब कालसर्प का योग कुण्डली, में जीवों को सताता है।
शिर्डी के ज्ञानतीर्थ पर तब, प्रभु पार्श्व को पूजा जाता है।।
उस तीर्थ तथा तीर्थाधिपति को, मेरा अर्घ्य समर्पण है।
''चन्दनामती'' सब कष्ट मिटाने, हेतु नाथ पद वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथसमन्वितज्ञानतीर्थाय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

-शेरछंद-

जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ जगत् वंद्य हैं।
जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ सतत वंद्य हैं।।
जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ बालयति हैं।
जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ त्रिजगपति हैं।।1।।

वाराणसी में राजा अश्वसेन महल में।
सोलह सुपन देखे थे महारानी वामा ने।।
तीर्थेश शिशु को जन्म दे वे धन्य हुई थीं।
इन्द्रों से पूज्य प्रभु से कृतकृत्य हुई थीं।।2।।

पाण्डुकशिला पे इन्द्र ने प्रभु का न्हवन किया।
पश्चात् पार्श्वनाथ नामकरण कर दिया।।
ये बालयती बन गये विवाह नहिं किया।
दश भव से कमठ का बहुत उपसर्ग सह लिया।।3।।

हैं सर्प चिन्हयुक्त पार्श्वनाथ की प्रतिमा।
इनका चरित पढ़ो तो जानो धैर्य की महिमा।।
सब मंदिरों में मिलती हैं प्रभु पार्श्व की प्रतिमा।
इनके अनेक तीर्थ की भी सुनते हैं महिमा।।4।।

उन तीर्थों में ही ज्ञानतीर्थ इक प्रसिद्ध है।
शिर्डी के पार्श्वनाथ का अतिशय प्रसिद्ध है।।
प्रतिदिन वहाँ इक सर्प देता प्रभु प्रदक्षिणा।
लेकिन कभी भक्तों को देता दुःख रंच ना।।5।।

ये कालसर्पयोग निवारक कहाते हैं।
ग्रहकेतु के नाशक प्रभू पारस कहाते हैं।।
जब कुण्डली में कालसर्पयोग सतावे।
शिर्डी के पार्श्वनाथ जी को हृदय में ध्यावें।।6।।

सब कष्ट नष्ट होंगे सुख व शांति मिलेगी।
जिनवर की भक्ति से सभी अशांति टलेगी।।
जयमाला का पूर्णार्घ्य प्रभु पारस को चढ़ाऊँ।
शिर्डी के पार्श्वनाथ ज्ञानतीर्थ को ध्याऊँ।।7।।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात प्रेरणा।
प्रभु पार्श्वनाथ कमल जिनालय की देशना।।
देकर उन्होंने भव्यों पे उपकार कर दिया।
सम्यक्त्व का उपदेश दे शिव सुख का पथ दिया।।8।।

निज ज्ञानज्योति हेतु ज्ञानतीर्थ को नमूँ।
निज आत्मसौख्य हेतु पार्श्वनाथ को प्रणमूँ।।
है 'चन्दनामती' मेरी इक प्रार्थना प्रभु से।
भव-भव का भ्रमण नष्ट हो शिवसुख मिले झट से।।9।।

ॐ ह्रीं कालसर्पयोगनिवारकश्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-दोहा-

पार्श्वनाथ की भक्ति से, भवसागर हो पार।
भौतिक सुख-संपत्ति भी, मिले सौख्य भंडार।।1।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

धरणेन्द्र-पद्मावती पूजन

रचयित्री-श्रीमती मालती जैन, धर्मालंकार
(वसंत कुंज), दिल्ली

श्री पार्श्वनाथ के प्रमुख यक्ष, धरणेन्द्र देव कहलाते हैं।
अपनी भार्या पद्मावति संग, वे जग में पूजे जाते हैं।।
धरणेन्द्र व पद्मावति माता, हमको भी शक्ति प्रदान करें।
हम इनका आह्वानन करके, जिनशासन का सम्मान करें।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथस्य शासन देव-धरणेन्द्रयक्ष! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पाञ्जलिः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथस्य शासन देव-धरणेन्द्रयक्ष! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथस्य शासन देव-धरणेन्द्रयक्ष! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथशासनदेवि पद्मावती मातः! अत्र आगच्छ आगच्छ पुष्पाञ्जलिः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथशासनदेवि पद्मावती मातः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथशासनदेवि पद्मावती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक (दोहा)

स्वर्ण कलश में नीर ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्ष! इदं जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

केशर चन्दन मिश्रकर, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तंदुल धवल अखण्ड ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

विविध सुगंधित पुष्प ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नाना विध पकवान्न ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

घृत दीपक का थाल ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अगर तगर की धूप ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नींबू आम्र अनार ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अष्टद्रव्य का थाल ले, पूजूँ शासन यक्ष।
पद्मावति धरणेन्द्र जी, दें भौतिक सुख सत्त्व।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवधरणेन्द्रयक्षपद्मावतीयक्षी! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेवि पद्मावति मातः! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

जयमाला

-शंभु छंद-

हे पार्श्वनाथ के परम भक्त, धरणेन्द्र देव महिमाशाली।
हे देवी पद्मावति माता, तुम तो सब जग से हो न्यारी।।
हम भौतिक सुख की इच्छा लेकर, तुम्हें मनाने आए हैं।
धरणेन्द्र व पद्मावति की हम, जयमाला गाने आये हैं।।1।।

यूँ तो चौबीसों जिनवर के, चौबिस हैं शासन देव कहे।
शासन देवी भी चौबिस हैं, पर पार्श्वनाथ के विशेष कहे।।

इनका कुछ दिव्य कथानक, जिनशासन ग्रंथों में वर्णित है।
प्रभु पार्श्वनाथ के जीवन से, इनका संबंध सुसज्जित है।।2।।
वाराणसि में इक बार पार्श्व प्रभु, नगर भ्रमण को निकल पड़े।
उद्यान में इक तापस को देखा, पंचाग्नी तप को करते।।
उन राजकुंवर श्री पार्श्वनाथ ने, अवधिज्ञान से जान लिया।
तपसी के लक्कड़ में जलते हुए नागयुगल पहचान लिया।।3।।
तापस को प्रभु ने बतलाया, तो क्रोधाग्नि में भड़क उठा।
लेकर कुठार लक्कड़ फाड़ा तो सबका ही दिल दहल उठा।।
उस नागयुगल की अंतिम सांसें, पार्श्वनाथ पहचान गये।
फिर महामंत्र का संबोधन, सुनते ही उनके प्राण गये।।4।।
वे नागनागिनी मर करके, धरणेन्द्र व पद्मावती हुए।
श्री पार्श्वनाथ के यक्ष-यक्षिणी, बनकर जगत् प्रसिद्ध हुए।।
जब पार्श्वनाथ जी के ऊपर, कमठाचर ने उपसर्ग किया।
दोनों ने आ उपसर्ग दूर कर, पूरण निज कर्तव्य किया।।5।।
धरणेन्द्र व पद्मावति की महिमा, आर्ष ग्रंथ में गाई है।
इनके द्वारा की गई प्रभू की, भक्ति बहुत बतलाई है।।
अहिच्छत्र तीर्थ इसलिए धरा पर, अतिशय पूजा जाता है।
प्रभु पार्श्वनाथ के साथ वहाँ, इनको भी पूजा जाता है।।6।।
धरणेन्द्र व पद्मावति की हम, जयमाल गूँथ कर लाये हैं।
''मालती'' पुष्प कर में लेकर, हम उन्हें मनाने आए हैं।।
भौतिक इच्छाएँ पूरी कर, प्रभु भक्ति की शक्ती देना।
सब संकट विघ्न निवारण कर, सम्यक्त्व की दृढ़ युक्ती देना।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथस्य शासनदेव धरणेन्द्रयक्ष-पद्मावतीयक्षी इदं जयमाला अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

-सोरठा-

पद्मावति धरणेन्द्र, का सम्मान करो सभी।
सुख-शांति अरु क्षेम, मिलते हैं भव सुख सभी।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

पद्मावती माता की पूजा

-श्रीमती त्रिशला जैन, लखनऊ

-स्थापना-

जग के जीवों के शरणागत, मिथ्यात्व तिमिर हरने वाले।
तुम कर्मदली तुम महाबली, शिवरमणी को वरने वाले।।
हे पार्श्वनाथ! तेरी महिमा, सारे ही जग से न्यारी है।
तब ही तो पद्मावति माता, तव चरणों में बलिहारी है।।
ऐसी माता का आह्वानन, स्थापन करने आये हैं।
पुष्पों को अंजलि में भरकर पुष्पांजलि करने आये हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवि! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथ भक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवि! अत्र मम-सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।।

-अष्टक-

तर्ज–देखा एक ख्वाब तो ये.....

रत्नों की झारि में मैं नीर भर के लाई माँ।
अपनी तृषा बुझाने तेरे पास आई माँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं जलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

धन धान्यसुत की चाह से तृप्ति हुई नहीं।
चंदन चरण में चर्चते ही तृप्ति हो गयी।।

सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं चंदनं गृहाण गृहाण स्वाहा।

तंदुल धवल के पुंज तव चरण में चढ़ाऊँ।
सौभाग्य हो अखण्ड यही भावना भाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंपा चमेली केतकी पुष्पों को मंगाऊँ।
हर्षितमना होकर तेरे चरणों में चढ़ाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।

नैवेद्य सब तरह के बना करके मैं लाऊँ।
रत्नों के थाल में सजा-सजा के चढ़ाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

दीपक जला के मैं तुम्हारी आरती करूँ।
दे दो सुज्ञान माँ यही मैं याचना करूँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

चंदन अगरु कपूर युक्त धूप जलाऊँ।
सुरभित दशों दिशाएँ हो मन भावना भाऊँ।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन हैं खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अंगूर आम्र आदि फल के थाल सजाके।
हो आश पूरी आए जो चरणों में आपके।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं फलं गृहाण गृहाण स्वाहा।

जलगंध पुष्प फल चरुवर सबको मिलाके।
पूजा करे जो अर्घ्य से मनकंज खिला के।।
सुन ख्याति तेरी माँ मुझे आनन्द हो रहा।
करके तेरा गुणगान मन सुमन है खिल रहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्री पद्मावति महादेवी! इदं अर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अथ जयमाला

पद्मावती माता तुम्हारे गुण अनेक हैं।
पारसप्रभु की गाथा भी इसमें विशेष है।।
सुनिए प्रभु की गौरव गाथा अब हम सुनाते हैं।
पूजन करने के बाद अब जयमाला गाते हैं।।

तर्ज–करती हूँ तुम्हारी भक्ति.....

वंदन पद्मावति माता तुम, स्वीकार करो ना।
हम दर पे तेरे आए, बेड़ा पार करो माँ।।
पद्मावति माता.....।।

इक दिन कुमारावस्था में पारस प्रभू चले।
लेकर सखागण साथ में थे घूमने निकले।।
गंगातट पर एक तापसी खोटे तप कर रहा।
जलती लकड़ी के अन्दर नागयुगल झुलस रहा।।
ऐसे मिथ्या आचरणों का, संहार करो माँ।
हम दर पे तेरे आए, बेड़ा पार करो माँ।।1।।

पारस प्रभू उसके निकट आये जब देखने।
अन्दर की बातें जानकर उससे लगे कहने।।
दुर्गति में जायेगा ऐसा मिथ्यातप करने से।
दिखलाया नागयुगल को जो मरणासन्न जलने से।।
ऐसे मरणासन्न प्राणी का, उद्धार करो माँ।
हम दर पे तेरे आए, बेड़ा पार करो माँ।।2।।

पारस प्रभू ने करुणाकर उपदेश जब दिया।
संन्यास धारकर मरने से उत्तमगति बंध किया।।
धरणेन्द्र और पद्मावती दोनों बन गये जाकर।
पारस प्रभु का वंदन किया तत्क्षण यहाँ आकर।।
महामंत्र राज का सुमिरन अब साकार करो माँ।
हम दर पे तेरे आए, बेड़ा पार करो माँ।।3।।

ऐसी माता पद्मावती की वंदना करूँ।
जल आदिक आठों द्रव्यों से मैं अर्चना करूँ।।
बहुतों पे माता आपने उपकार है किया।
अब हम पर भी हे माता! दिखला दो अपनी दया।।
सांसारिक दुःखों का मेरे, संहार करो माँ।
हम दर पे तेरे आए, बेड़ा पार करो माँ।।4।।

'त्रिशला' ने यह पूजा रची भक्ति मन में धरके।
उसका फल बस ये चाहती प्रभु भक्ति भरे मुझमें।।
वंदन पद्मावति माता.....।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं पार्श्वनाथभक्ता धरणेन्द्रभार्या श्रीपद्मावति महादेव्यै पूर्णार्घ्यं।

-दोहा-

हे माता मम हृदय में, पूर्णरूप से आप।
त्रुटि कहीं जो रह गयी, कर दो मुझ को माफ।।

।।इत्याशीर्वादः।।

जाप्य – ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय फणा-फणिमंडिताय कमठमान विध्वंसनाय सर्वग्रहोच्चाटनाय सर्वोपद्रवशांतिं करु कुरु स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्र फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाय शीशं।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमो जोडि हाथं, नमों देव देवं सदा पार्श्वनाथं।।1।।

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावे, महाआग तैं नाग तैं तू बचावे।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावे, महारोग तैं बन्ध तैं तू छुड़ावे।।2।।

दुःखी दुःख हर्ता सुखी सुख कर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्त्ता।
हरे यक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं।।3।।

दरिद्रीन कों द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै सम्पदा सर्व को देहि दाता।।4।।

महाचोर कों, वज्र को भय निवारे, महापौन के पुंजतें तू उबारे।
महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभ शैलेश को वज्रभारा।।5।।

महामोह अंधेर को ज्ञान भानं, महाकर्म कांतार को दौ प्रधानं।
किये नाग नागिन अधोलोक स्वामी, हर्‌यो मान तू दैत्य को ही अकामी।।6।।

तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं, तुही दिव्य चिंतामणि काम एनं।
पशू नर्क के दुःख तैं, तू छुड़ावे, महा स्वर्ग में मुक्ति में तू बसावे।।7।।

करै लोह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी।
करै सेव ताकी करैं, देव सेवा, सुने वैन सो ही लहै ज्ञान मेवा।।8।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरै ध्यान ताके सबै दोस भागै।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे।।9।।

-दोहा-

गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकै, कीजे आप समान।।10।।

पार्श्वनाथ स्तुति

-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

भवसंकट हर्ता पार्श्वनाथ! विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना! हे क्षमाशील! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिवपथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, सब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।1।।

वाराणसि नगरी धन्य हुई, धन धन्य हुए सब नर-नारी।
हे अश्वसेननंदन ! तुम से, वामा माँ भी मंगलकारी।।
वैशाख वदी वह दूज भली, माता उर आप पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता से प्रश्न विचारे थे।।2।।

शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि थी, जब आए प्रभु साक्षात् यहाँ।
शैशव में सुर संग खेल रहे, अहियुग को दीना मंत्र महा।।
तब नागयुगल धरणेन्द्र तथा, पद्मावति होकर भक्त बने।
शुभ पौष वदी ग्यारस के दिन, प्रभु दीक्षा ले मुनि श्रेष्ठ बने।।3।।

तत्क्षण मनपर्ययज्ञानी हो, सब ऋद्धी से परिपूर्ण हुए।
इक समय सघन वन के भीतर, प्रभु निश्चल ध्यानारूढ़ हुए।।
कमठासुर ने उपसर्ग किया, अग्नी ज्वाला को उगल-उगल।
पत्थर फेंके मूसलधारा, वर्षायी आँधी उछल-उछल।।4।।

निष्कारण ही कमठासुर ने, दश भव तक बैर निकाला था।
प्रभु को दुख दे-देकर उसने, खुद को दुर्गति में डाला था।।
प्रभु महा-सहिष्णु क्षमा-सिन्धु, भव-भव से सहते आये हैं।
तन से ममता को छोड़ दिया, नहिं किंचित् भी घबराए हैं।।5।।

प्रभु क्षपक श्रेणि में चढ़ करके, मोहनी कर्म का नाश किया।
उस ही क्षण धरणीपति पद्मावति, आ करके बहुभक्ति किया।।

प्रभु को मस्तक पर धारण कर, ऊपर से फण का छत्र किया।
प्रभुवर ने तब उस ही क्षण में, कैवल्यश्री को वरण किया।।6।।

पृथ्वी से बीस हजार हाथ, ऊपर पहुँचे अर्हन्त बने।
इन्द्रों के आसन काँप उठे, प्रभु समवसरण गगनांगण में।।
वदि चैत्र चतुर्थी तिथि उत्तम, जब प्रभु में ज्ञान प्रकाश हुआ।
उस स्थल का उस ही क्षण से, 'अहिच्छत्र' तीर्थ यह नाम हुआ।।7।।

नव हाथ देह सौ वर्ष आयु, मरकतमणि सम आभाधारी।
अहि चिह्न सहित वे पार्श्वप्रभो! मुझको हों नित मंगलकारी।।
श्रावण सुदि सप्तमि तिथि के दिन, सिद्धीकांता से प्रीति लगी।
मैं नमूँ 'ज्ञानमति' तुम्हें सदा, मेरी हो सर्वंसहा मती।।8।।

श्री पद्मावती स्तोत्र (भाषा)

(शृंगार करते समय यह स्तोत्र पढ़ें)

जिनशासनी हँसासनी पद्मावती माता।
भुज चार से फल चार दे, पद्मावती माता।। टेक.।।
जब पार्श्वनाथ जी ने शुक्लध्यान आरम्भा।
कमठेश ने उपसर्ग तब, किया था अचम्भा।।
निज नाथ सहित, आपके सहाय किया है।
जिन नाथ को निज माथ पै चढ़ाय लिया है।। जिनशासनी.।।1।।

फनतीन सुमन लीन तेरे शीश विराजै।
जिनराज तहाँ ध्यान धरै आप विराजै।।
फनि इन्द्र ने फन की करी जिनेन्द्र पे छाया।
उपसर्ग वर्ग मेट के आनन्द बढ़ाया।। जिनशासनी.।।2।।

जिन पार्श्व को हुआ, तभी केवल सुज्ञान है।
समवसरण की बनी रचना महान है।।
प्रभु ने किया धर्मार्थ काम मोक्ष दान है।
तब इन्द्र ने आके किया पूजा विधान है। जिनशासनी.।।3।।

जब से किया तुम पार्श्व के, उपसर्ग का विनाश।
तब से हुआ जश आपका त्रैलोक में प्रकाश।।
इन्द्रादि ने भी आपके गुण में किया हुलास।
किस वास्ते कि इन्द्र खास पार्श्व का है दास।। जिनशासनी.।।4।।

धर्मानुराग रंग में उमंग भरी हो।
सन्ध्या समान लाल रंग अंग धरी हो।
जिन सन्त शील वन्त पै, तुरंत खड़ी हो।
मनभावनी दरशावनी, आनन्द बड़ी हो।। जिनशासनी.।।5।।

जिनधर्म की प्रभावना का भाव किया है।
तिन साथ ने भी आपको सहाय लिया है।।

तब आपने इस बात को बनाय लिया है।
जिनधर्म के निशान को फहराय दिया है।। जिनशासनी.।।6।।

था बोध ने तारा का किया कुम्भ में थापन।
अकलंक जी से करते रहे वाद वेहापन।।
तब आपने सहाय किया धाय मात बन।
तारा का हरा मान हुआ बोध उत्थापन।। जिनशासनी.।।7।।

इत्यादि जहाँ धर्म का विवाद पड़ा है।
तब आपने परवादियों का मान हरा है।।
तुमसे ही स्याद्वाद का निशान खरा है।
इस वास्ते हम आपसे अनुराग धरा है।। जिनशासनी.।।8।।

तुम शब्दब्रह्मा रूप मंत्र मूर्ति धरैया।
चिन्तामणी समान कामना की भरैया।।
जग जाप जोग जैन की सब सिद्धि करैया।
परवाद के पुरयोग की तत्काल हरैया।। जिनशासनी.।।9।।

लखि पार्श्व तेरे पास शत्रु त्रासते भाजें।
अंकुश निहार दुष्ट जुष्ट दर्प को त्याजैं।।
दुख रूप खर्व गर्व को वह वज्र हरै है।
कर कंज में इक कंज सो सुख पुंज भरे है।। जिनशासनी.।।10।।

चरणारविन्द में है नूपुरादि आभरन।
कटि में है सार मेखला प्रमोद की करन।।
उर में है सुमन माल सुमन भान की माला।।
षट् रंग अंग संग संग सो है विशाला।। जिनशासनी.।।11।।

(बिछुआ, पायल, हार आदि)

कर कंज चारु भूषण सों भूरि भरा है।
भवि वृन्द को आनन्द कन्द पूरि करा है।।

जुग भान कर्ण कुण्डल सौ जोति धरा है।
सिर शीश फूल फूल सो अतुल्य भरा है।। जिनशासनी.।।12।।

(कान की झुमकी, मुकुट, शीशफूल आदि)

मुख चन्द्र को अमंद देख चन्द्र भी थमा।
छवि हेर हार हो रहा रम्भा को अचम्भा।
दृग तीन सहित लाल तिलक भाल धरे है।
विकसित मुखारविंद सो आनंद झरे हैं।। जिनशा.।।13।।

(कंगन, कर्णाभूषण, बिंदी)

जो आपको त्रिकाल लाल चाह सो ध्यावे।
विकराल भूमि पाल उसे भाल झुकावै।।
जो प्रीति सो प्रतीत और प्रीति बढ़ावै।
सो रिद्धि सिद्धि वृद्धि नवो निद्धि को पावै।। जिनशा.।।14।।

जो दीप दान के विधान से तुम्हें जपै।
तो पाय के निधान तेज पुंज से दिपै।।
जो भेद मंत्र वेद में निवेद किया है।
सो वाध के उपाधि सिद्ध साध लिया है।। जिनशा.।।15।।

धन धान्य का अर्थी है सो धन धान्य को पावै।
सन्तान का अर्थी है सो सन्तान खिलावै।।
निज राज का अर्थी है सो फिर राज लहावै।
पद भ्रष्ट सुपद पाय के मन मोद बढ़ावै।। जिनशा.।।16।।

ग्रह क्रूर व्यन्तराल व्याल जाल पूतना।
तुम नाम के सुनत ही सो भागे भूतना।।
कफ वात पित्त रक्त रोग शोक शाकिनी।
तुम नाम से डरी मही परात डाकिनी।।जिनशा.।।17।।
भयभीत की हरनी है, तुही मात भवानी।
उपसर्ग दुर्ग द्रावती दुर्गावती रानी।।

तुम संकटा समस्त कष्ट काटनी दानी।
सुख सार की करनी तु शंकरीश महारानी।। जिनशा.।।18।।

इस वक्त में जिनभक्त को दुख व्यक्त सतावै।
हे मात तुझे देख के क्या दर्द ना आवे।।
सब दिन से तो करती रही जिनभक्त पै छाया।।
किस वास्ते उस बात को ए मात भुलाया।। जिनशा.।।19।।

हो मात मेरे सर्व ही अपराध क्षमा कर।
होता नहीं क्या बाल से कुचाल यहाँ पर।।
कुपुत्र तो होते हैं जगत माहि सरासर।
माता न तजै तिन सौ कभी नेह जन्म भर।। जिनशा.।।20।।

अब मात मेरी बात को सब भांति सुधारो।
मन कामना को सिद्ध करो विघ्न विदारो।।
मत देर करो मेरी ओर नेक निहारो।
करकंज की छाया करो दुख दर्द निवारो।। जिनशा.।।21।।

ब्रह्मण्डनी सुख मण्डनी खल खण्डनी ख्याता।
दुख टारि के परिवार सहित दे मुझे साता।।
तज के विलम्ब अम्बाजी अवलम्ब दीजिए।
वृष चन्द नन्दवृन्द को आनन्द दीजिए।।जिनशा.।।22।।

जिनधर्म से डिगने का कहीं आ पड़े कारन।
तो लीजिए उबार मुझे भक्त उदारन।।
निज कर्म के संयोग से जिस जौन में जावौ।
तहाँ दीजिए सम्यक्त्व जो शिवधाम को पावौ।।
जिनशासनी हंसासनी पद्मावती माता।
भुज चारतें फल चार दे पद्मावती माता।। जिनशा.।।23।।

शिरडी पंचकल्याणक-वार्ता

(1) प्रश्न- कैसा उत्सव आया आज, क्यों धूम मची शिरडी में।
बतला दे बहना आज, क्यों धूम मची शिरडी में।।1।।कैसा.।।
उत्तर- सुनले मेरी बहना आज, क्यों धूम मची शिरडी में।
देखो ज्ञानतीर्थ पर आज, पंचकल्याणक है शिरडी में।।1।।सुन ले.।।

(2) प्रश्न- है ज्ञान तीर्थ यह कैसा ?, यहाँ मेला लगा है कैसा ?।
क्या बात है इसमें खास ? क्यों धूम मची शिरडी में।।2।। कैसा.।।
उत्तर- चिन्तामणि पार्श्व प्रभू जी, केतू ग्रह नाथ प्रभू जी।
उनकी मूर्ति विराजी आज, इसलिए धूम मची शिरडी में।।2।।सुन ले.।।

(3) प्रश्न- रे बहना मुझे बता दे, हर बात मुझे समझा दे।
क्या हो रहा यहाँ निर्माण, क्यों धूम मची शिरडी में।।3।।कैसा.।।
उत्तर- यहाँ कमल का फूल खिलेगा, जो मंदिर रूप दिखेगा।
जहाँ विराजें पारसनाथ, दुखनाशक बन शिरडी में।।3।।सुन ले.।।

(4) प्रश्न- प्रेरणा मिली है किसकी, योजना कमल मंदिर की।
किसने बतलाई यह बात, क्यों धूम मची शिरडी में।।4।।कैसा.।।
उत्तर- प्रेरणा मिली है जिनकी, महिमा क्या जानो उनकी।
वे हैं गणिनी प्रमुख महान, माता ज्ञानमती जी जग में।।4।।सुन ले.।।

(5) प्रश्न- क्या महिमा और है प्रभु की, बतला दे सखी पारस की।
क्यों यहाँ विराजे नाथ, क्यों धूम मची शिरडी में।।5।।कैसा.।।
उत्तर- जो कालसर्प से पीड़ित, नर नारी को दुख भौतिक।
उनके होंगे सब दुख शान्त, प्रभु पारस की भक्ती से।।5।।सुन ले.।।

(6) प्रश्न- किस नगर में ये प्रभु जन्मे, क्या नाम पिता माता के।
इनने दीक्षा कहाँ ली जाय, क्यों धूम मची शिरडी में।।6।।कैसा.।।
उत्तर- काशी में जन्म लिया था, पितु आश्वसेन माँ वामा।
तप कर लिया अश्ववन में जा, बन बालयती पारस ने।।6।।सुन ले.।।

(7) प्रश्न- कहाँ केवलज्ञान हुआ है, निर्वाण का धाम कहाँ है।
बतला दे बहना नाम, क्यों धूम मची शिरडी में।।कैसा.।।7।।

उत्तर- अहिच्छत्र में ज्ञान हुआ था, वहीं समवसरण भी रचा था।
सम्मेदशिखर से शिव पद, पाया है पारस प्रभु ने।।सुन ले.।।7।।

(8) प्रश्न- इक प्रश्न सहज है उठता, प्रतिमा पर क्यों फण रहता ?
इस फण का क्या है राज, क्यों धूम मची शिरडी में।।8।।कैसा.।।

उत्तर- कमठासुर ने पारस पर, उपसर्ग किया जब आकर।
आये नागयुगल बन देव, उपसर्ग निवारण करने।।सुन ले.।।
इक ने फण पर बैठाया, इक ने फण छत्र लगाया।
वही बनी पार्श्व पहचान, वही उत्सव है शिरडी में।।8।।सुन ले.।।

दोनों मिलकर-

शिरडी में शुभ घड़ी आई, प्रभु पार्श्व की महिमा बताई।
समझो तुम भी यह बात, क्यों धूम मची शिरडी में।।9।।
उनका ही कमल का मंदिर, यहाँ बने जिनालय सुन्दर।
यह है ज्ञानतीर्थ विख्यात, तभी धूम मची शिरडी में।।10।।
है पंचकल्याण उसी का, अतिशयकारी तीरथ का।
प्रभु तुम्हें बुलाएं आज, आओ ज्ञानतीर्थ शिरडी में।।11।।

पार्श्वनाथ चालीसा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

-दोहा-

परमसिद्ध परमात्मा, पार्श्वनाथ भगवान।
तीर्थंकर तेईसवें, करें जगत कल्याण।।1।।

पार्श्वनाथ के नाम का, चालीसा सुखकार।
पढ़ें भव्य जो भाव से, पावें सुख भण्डार।।2।।

-चौपाई-

जय जय पार्श्वनाथ जिनवर जी, जय जय तेईसवें प्रभुवर जी।।1।।
जय जय नाथ त्रिजग के अधिपति, जय जय सिद्धशिला पर स्थित।।2।।
काशी देश बनारस नगरी, धनदरचित वह अनुपम नगरी।।3।।
नौ मंजिल का महल बनाया, वैजयंत था नाम कहाया।।4।।
अश्वसेन राजा रहते थे, राज्य बनारस में करते थे।।5।।
रानी वामादेवी न्यारी, रूपवती सुन्दर अति प्यारी।।6।।
सोलह सुपने देखे जिनने, फल सुन पति से खुश थीं मन में।।7।।
थी वैशाख कृष्ण दुतिया तिथि, गर्भकल्याणक उत्सव की तिथि।।8।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जनमे, धन्य मात पितु सभी धन्य थे।।9।।
पन्द्रह मास रतन बरसे थे, जिन्हें प्राप्तकर सब हरषे थे।।10।।
शैशव बाल युवावस्था में, प्रभु की दिव्य प्रभा थी सबमें।।11।।
नहीं रचाया ब्याह प्रभू ने, चले वनों में दीक्षा लेने।।12।।
जन्मतिथ में दीक्षा धार, पौष वदी एकादशि प्यारी।।13।।
तप कर केवलज्ञान उपाया, अहिच्छत्र तब तीर्थ बनाया।।14।।
कृष्णा चैत्र चतुर्थी के दिन, समवसरण लक्ष्मी पाया जिन।।15।।
दिव्यध्वनि से अलख जगाया, जन-जन का अज्ञान नशाया।।16।।
गिरि सम्मेदशिखर पर जाकर, स्वर्णभद्र पर ध्यान लगाकर।।17।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन, मोक्षधाम पाया पारस जिन।।18।।
पंचकल्याणक अधिपति स्वामी, पारसनाथ जिनेश्वर नामी।।19।।
इनका बहुत प्रसिद्ध कथानक, ग्रंथ जिनागम में है वर्णित।।20।।

कमठ ने इनको बहुत सताया, नौ भव तक भी वैर निभाया।।21।।
जब पारस प्रभु बने तीर्थकर, संवर देव बना कमठाचर।।22।।
किया बहुत उपसर्ग प्रभू पर, पर न चला प्रभु पर उसका बस।।23।।
आखिर हार मान ली उसने, बैठ गया दिव्यध्वनि सुनने।।24।।
उसका भी तब जीवन बदला, प्रवचन सुन सम्यग्दृष्टि बना।।25।।
सुना कथानक नाग युगल का, पारस प्रभु के सम्बोधन का।।26।।
नाग बना धरणेन्द्र भी कैसे, नागिन पद्मावति के पद में।।27।।
उनने निज कर्तव्य निभाया, संवरदेव को मार भगाया।।28।।
शासन देव-देवि ये प्रभु के, कहलाते हैं सारे जग में।।29।।
ये निश्चित सम्यग्दृष्टी हैं, ग्रंथों में महिमा वर्णित है।।30।।
पार्श्वनाथ के तीर्थ बहुत हैं, संकटमोचन पारसप्रभु हैं।।31।।
केतूग्रह के शान्तीकारक, कालसर्प का योग निवारक।।32।।
चिन्तामणि पारस कहलाए, सबका बेड़ा पार लगाएं।।33।।
शिरड़ी में इक ज्ञानतीर्थ है, कहता पारसनाथ कीर्ति है।।34।।
इस तीरथ की महिमा न्यारी, पार्श्वनाथ का अतिशय भारी।।35।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माता, इनसे जुड़ा तीर्थ का नाता।।36।।
उनकी एक प्रेरणा पाकर, पारसनाथ प्रभू पधराकर।।37।।
कमल जिनालय बने बताया, भक्तों ने यह तीर्थ बनाया।।38।।
ज्ञानतीर्थ की जय जय बोलो, अंतर्मन का कल्मष धो लो।।39।।
मन-वच-तन पावन हो जावे, पार्श्वनाथ दर्शन मिल जावे।।40।।

-दोहा-

वीर संवत् पच्चीस सौ, उनतालिस का वर्ष।
पार्श्वनाथ की गर्भ तिथि, रचा पाठ अति हर्ष।।1।।

ज्ञानमती गणिनीप्रमुख, की शिष्या अज्ञान।
लिया चन्दनामति सुखद, पार्श्वनाथ का नाम।।2।।

चालीसा प्रभु पार्श्व का, कर लो चालिस बार।
पार्श्वनाथ के नाम से, भरो सुगुण भण्डार।।3।।

भजन

तर्ज–इस युग की माँ शारदे.....

शिरडी के पारस प्रभू, स्वर्णिम तेरा धाम है।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ ये महान है, सबका परमधाम है।।शिरडी के.।।

जिनधर्म के चौबिस जिनवरों में,
तेइसवें प्रभु पारसनाथ हैं।
उपसर्गजेता इन्द्रिय विजेता,
हम सबके प्रभु पारसनाथ हैं।
सबको शक्ति देके, सिद्धिप्रिया लेके, तीनलोक के बन गये नाथ हैं।
केतूग्रह की शान्ति हो, लें पार्श्वप्रभु नाम हैं।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ यह महान है, सबका परमधाम है।।1।।

यदि आपके जन्म की कुण्डली में,
है काल के सर्प का योग भी।
शिरडी के पारस प्रभु की कृपा से,
नश जाते सब रोग अरु शोक भी।।
तुम भी करो भक्ती, तब मिलेगी शक्ती, भौतिक सभी सुख की प्राप्ति हो।
चिंतामणि पारसप्रभू, इनका अपर नाम है।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ यह महान है, सबका परमधाम है।।2।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी का,
आशीष सब भक्तों को मिला।
सुंदर कमल का मंदिर तभी तो,
जल में कमल पुष्प सदृश खिला।
''चन्दनामती'' यह, मूर्ति मनोहर है, सबके लिए मानो वरदान है।
शिरडी में जाकर जपो, पारसप्रभू नाम है।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ यह महान है, सबका परमधाम है।।3।।

भजन

तर्ज–सज धज कर इक दिन.....

शिरडी के पारस बाबा को मिलकर मनाएँगे।
हम ज्ञानतीर्थ पर पुष्पों का उपवन महकाएँगे।।टेक.।।

पारसप्रभू चिंतामणी चिंतित फल देते हैं।
निज भक्त के सब कष्ट दुख को वे हर लेते हैं।।
उनका दर्शन-वन्दन करके कुछ पुण्य कमाएँगे।
हम ज्ञानतीर्थ पर पुष्पों का उपवन महकाएँगे।।1।।

जब मानसिक या वाचनिक कायिक व्यथा होवे।
प्रभु के चरण मन में रहें सो सब व्यथा खोवे।।
भक्ति करके हम भी इकदिन भगवन बन जाएँगे।
हम ज्ञानतीर्थ पर पुष्पों का उपवन महकाएँगे।।2।।

इस तीर्थ के कण-कण में गणिनी ज्ञानमति जी हैं।
उनके शुभाशीषों से नवनिर्मित कृती यह है।।
''चन्दनामती'' हम कालसर्प का योग हटाएँगे।
हम ज्ञानतीर्थ पर पुष्पों का उपवन महकाएँगे।।3।।

भजन

तर्ज–ढपली वाले! ढपली बजा.....

शिरडी वाले-पारस प्रभू, तेरे दर्शन से भक्तों के हो...
संकट शांत हों.....।।टेक.।।

मानव का जीवन, संघर्षमय है, उनसे न विचलित होना।
आ जावें संकट, तो भी सदा ही, प्रभु नाम मन में जपना-हो हो हो
शिरडी में जाकर, प्रभु पार्श्व से तुम, सब दुख-सुखों को कहना।।
शिरडी.।।1।।

सुनते हैं पारस, पत्थर को छूकर, लोहा भी सोना बनता।
लेकिन प्रभू पारस पद को छूकर, मानव है पारस बनता-हो हो हो
बनना है पारस तो, पारस प्रभू की, भक्ती में तन्मय होना।।
शिरडी.।।2।।

सच्चे हृदय से सुमिरन करो तो, मनचाहा फल तुम पाओ।
शिरडी में जा करके ''चन्दनामति'', पारस प्रभू को मनाओ-हो हो हो
पारस हों मन में, पारस वचन में, भक्तों! यही ध्यान रखना।।
शिरडी.।।3।।

भजन

तर्ज–पंखिड़ा.....

वंदना करूँ मैं प्रभू पार्श्वनाथ की।
अश्वसेन और माता वामा लाल की।।
वंदना.....वंदना.....वंदना.....वंदना.....।। टेक.।।

देखो वाराणसी से प्रभू के भक्त आये हैं।
प्रभु के जन्म की खुशी में सुन्दर रत्न लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।1।।

देखो अहिच्छत्र से प्रभू के भक्त आए हैं।
केवलज्ञान की खुशी में सुन्दर गीत गाये हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।2।।

देखो गिरि सम्मेद से प्रभू के भक्त आए हैं।
प्रभु के मोक्ष की खुशी में सभी लाडू लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।3।।

सारे देश के पुजारी भक्त दर पे आते हैं।
'चन्दनामती' ये भक्ति करके पुण्य पाते हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।4।।

भजन

तर्ज-सपने में.....

पारस प्रभु का मस्तकाभिषेक निराला है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।टेक.।।

है प्रतिमा अतिशयकारी, सांवरिया छवि मनहारी।
पद्मासन मूरति प्यारी, है सबके लिए सुखकारी।।
तीर्थंकर पारसनाथ का नाम निराला है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।1।।

गणिनी श्री ज्ञानमती की, प्रेरणा मिली तीरथ को।
शिरडी में ज्ञानतीर्थ की, पावन हो गई धरा वो।।
गूंजे तीरथ पर पार्श्वनाथ जयकारा है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।2।।

पहली ही बार यहाँ पर, हुआ पंचकल्याण महोत्सव।
नगरी में धूम मची है, दुलहन की तरह सजी है।।
''चन्दनामती'' यह तीर्थ बन गया प्यारा है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।3।।

भजन

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
तीन लोक के सौ इन्द्रों ने, किया तुम्हें वंदन है।।
सौ-सौ बार नमन है-2
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सौ-सौ बार नमन है।।टेक.।।

तीन तीर्थ माने हैं जिनके, पंचकल्याण से पावन,
वाराणसि, अहिच्छत्र और सम्मेदशिखर मनभावन।
इनके दर्शन से भक्तों के, पावन होते मन हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।1।।

वर्तमान में पार्श्वनाथ का, अतिशय खूब बखाना,
अंतरिक्ष, शिरपुर, चंवलेश्वर, मक्सी, अडिन्दा जाना।
अतिशायी कचनेर में जाकर, करो प्रभू दर्शन है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।2।।

कर्नाटक के बीजापुर में, सहस्रफणा पारस हैं,
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में, चिन्तामणि पारस हैं।
भारत के अनेक नगरों में, पारस प्रभु मंदिर हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता, कहती हैं सब भक्तों को,
पारस प्रभु के अतिशय से, परिचित करवाओ सबको।
सभी ''चन्दनामती'' हमेशा, उत्सव करो सफल है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।4।।

भजन

तर्ज-माई रे माई.....

ज्ञान तीर्थ के पंचकल्याण का स्वर्णिम अवसर आया।
शिरडी में प्रभु पार्श्वनाथ का अतिशय देखो छाया।।
बोलो पार्श्वनाथ की जय, बोलो ज्ञानतीर्थ की जय-2।।टेक.।।

महाराष्ट्र में शिरडी नामक दर्शनीय स्थल है।
पार्श्वनाथ की प्रतिमा से बन गया तीर्थ स्थल है।।
उसी तीर्थ के दर्शन करने का शुभ अवसर आया।
शिरडी में प्रभु पार्श्वनाथ का अतिशय देखो छाया।।
बोलो पार्श्वनाथ की जय, बोलो ज्ञानतीर्थ की जय-2।।1।।

सुन्दर कमल जिनालय में श्री पार्श्वनाथ राजेंगे।
इनकी भक्ती से केतू ग्रह के अरिष्ट भागेंगे।।
कालसर्प का योग विनाशन करती प्रभु पद छाया।
शिरडी में प्रभु पार्श्वनाथ का अतिशय देखो छाया।।
बोलो पार्श्वनाथ की जय, बोलो ज्ञानतीर्थ की जय-2।।2।।

गणिनी ज्ञानमती माता की मिली प्रेरणा प्यारी।
पार्श्वनाथ को करा विराजित सुखी रहें नर नारी।।
तभी चंदनामती देश ने यह उपहार है पाया।
शिरडी में प्रभु पार्श्वनाथ अतिशय देखो छाया।।
बोलो पार्श्वनाथ की जय, बोलो ज्ञानतीर्थ की जय-2।।3।।

भजन

तर्ज–ऐ मेरे वतन के लोगों.....

भारत के जैनी वीरों, तुम सुन लो कथा पुरानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।। टेक.।।

इक नहीं अनन्तों जिनवर, साकेतपुरी में जन्मे।
सम्मेदशिखर से शिवपद, पा सिद्धशिला पर पहुँचे।।
उस रज को सिर पर धर लो, जो कहती अमर कहानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।1।।

बन करके दिगम्बर मुनिवर, इस गिरि पर ध्यान किया है।
कितनों ने तपस्या करके, कर्मों का नाश किया है।।
उन सब सिद्धों को नम लो, जो बने आत्म श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।2।।

यह सिद्धक्षेत्र जिनवर का, जैनी इसके अधिकारी।
इसका दर्शन-वन्दन है, हर मानव को हितकारी।।
पर्वत को वन्दन कर लो, सब जिनमत के श्रद्धानी।।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।3।।

यह तीर्थ अहिंसा का शुभ, सन्देश सुनाता जग को।
भावों को शुद्ध बनाकर, तिरना सिखलाता सबको।
''चन्दनामती'' हम सबमें, सार्थक हो अब प्रभुवाणी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।4।।

ये धर्मतीर्थ न कभी भी, बेचे व खरीदे जाते।
हर मानव की श्रद्धा के, ये केन्द्रबिन्दु कहलाते।।
निजमत जिनमत में बदलो, बनकर सच्चे श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।5।।

भजन

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

शाश्वत है तीरथ मेरा, सम्मेदगिरि नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।। टेक.।।

कहते हैं इस गिरि की वन्दना से,
तिर्यंच-नरकायु मिलती नहीं है।
श्रद्धा सहित इसकी अर्चना से,
भव्यत्व कलिका खिलती रही है।।
रात अंधेरी हो, भक्ति सहेली हो, लगता न डर पर्वत पर कभी।
अतिशय से गूँजे यहाँ, सांवरिया का नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।1।।

इस युग के चौबिस तीर्थंकरों में,
मोक्ष गए बीस जिनवर यहाँ से।
कितने करोड़ों मुनियों ने भी,
तप करके शिवालय पाया यहाँ से।।
तीर्थ पुराना है, श्रेष्ठ खजाना है, सबको तिराता है संसार से।
तीरथ की कीरत अमर, कर सकता इंसान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।2।।

जिनधर्म निधि को पाकर के उसका,
सच्चा सदुपयोग करना है हमको।
आपस में मैत्री, दीनों पे करुणा,
का भाव जग में सिखाना है सबको।।
स्वार्थ त्याग करके, शीघ्र जाग करके, जैनत्व की सब रक्षा करो।
तीरथ की रज ''चन्दनामति'' मस्तक का परिधान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।3।।

पार्श्वनाथ भगवान की आरती

तर्ज–करती हूं तुम्हारी पूजा.....

करते हैं प्रभू की आरति, मन का दीप जलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।टेक.।।

हे अश्वसेन के नन्दन, वामा माता के प्यारे।
तेईसवें तीर्थंकर पारस, प्रभु तुम जग से न्यारे।।
तेरी भक्ती गंगा में जो स्नान करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।1।।

वाराणसि में जन्में, निर्वाण शिखरजी से पाया।
इक लोहा भी प्रभु चरणों में, सोना बनने आया।।
सोना ही क्या वह लोहा, पारसनाथ बनेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।2।।

सुनते हैं जग में वैर सदा, दो तरफा चलता है।
पर पार्श्वनाथ का जीवन, इसे चुनौती करता है।।
इक तरफा वैरी ही कब तक, उपसर्ग करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।3।।

कमठासुर ने बहुतेक भवों में, आ उपसर्ग किया।
पारसप्रभु ने सब सहकर, केवलपद को प्राप्त किया।।
कैवल्य ज्योति से पापों का, अंधेर मिटेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।4।।

प्रभु तेरी आरति से मैं भी, यह शक्ती पा जाऊं।
''चंदनामती'' तव गुणमणि की, माला यदि पा जाऊं।
तब जग में नहिं शत्रू का, मुझ पर वार चलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।5।।

ज्ञानतीर्थ की आरती

तर्ज-आने से जिनके आए बहार.....

हाथों में लेकर आरती का थाल, मन में है प्रभु की भक्ति ापार।
हम सब आए हैं आरति करने।।टेक.।।

अश्वसेन राजा, वामा माता के आंगन में।
वाराणसि नगरि में, पारसनाथ जिनवर जनमे।।
दीक्षा ली, बने बालयती,
हम सब आए हैं आरति करने।।1।।

पार्श्वनाथ जिनवर, समता धैर्य के हैं प्रदाता।
संकटों का निवारण, होता जो प्रभू द्वार आता।।
सुख मिलता, दुख टलता,
हम सब आए हैं आरति करने।।2।।

ज्ञानतीर्थ शिरडी, के पारस जिनेश्वर हैं प्यारे।
''चन्दनामति'' इनकी, आरति करके आरत निवारें।।
जय पारस, जय जय पारस,
हम सब आए हैं आरति करने।।3।।

धरणेन्द्र देव की आरती

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज –झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
धरणेन्द्र देव की सब मिल करके, आरति करो रे।
पारसनाथ प्रभू के ये ही, परम भक्त माने जाते।
पद्मावति माता के पति के, रूप में भी जाने जाते।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सब जन-जन के आराध्यदेव की, आरति करो रे।।1।।

कमठासुर ने उपसर्ग किया जब, पारसनाथ प्रभू पर।
धरणेन्द्र देव उपसर्ग मिटाने, पहुँचे वहाँ उसी क्षण।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
उपसर्ग निवारक धरणीपति की, आरति करो रे।।2।।

संसारी प्राणी धन-सुत की, इच्छा लेकर आते हैं।
आरति करके धरणीपति की, वे सन्तुष्टी पाते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
इच्छित फलदाता यक्षदेव की, आरति करो रे।।3।।

सम्यग्दृष्टी देव हमें तुम, सम्यक्बुद्धि प्रदान करो।
जैनधर्म में अडिग रहें हम, अन्त समय दुर्ध्यान न हो।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
यही ''सारिका'' भाव संजोकर, आरति करो रे।।4।।

पद्मावती माता की आरती

-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

ॐ जय पद्मावति माँ, माता जय पद्मावति माँ।
आरति तव दुःखहारी, जय मातेश्वरि माँ।।ॐ जय...।।

पार्श्वप्रभू की शासन देवी, जग में पूज्य हुईं।।माता.....
तेरी आरति से भक्तों की, इच्छा पूर्ण हुईं।।ॐ जय.....।।1।।

संसारी प्राणी धन-सुत की, इच्छा से आते।। माता.....
तेरे दर पर आकर उनके, संकट मिट जाते।।ॐ जय.....।।2।।

जो भी सच्चे मन से तेरी, आरति नित्य करें।।माता.....
भूत-प्रेत-डाकिनि-शाकिनि की, बाधा शीघ्र हरें।।ॐ जय...।।3।।

श्री धरणेन्द्र देव की भार्या, तुम मंगलकरणी।।माता.....
धन धान्यादिक वैभव, सौख्य सुखद भरणी।।ॐ जय.....।।4।।

पार्श्वनाथ के घोर उपसर्ग को, जहाँ पर दूर किया।।माता.....
वह स्थल अहिच्छत्र नाम से, जग में पूज्य हुआ।।ॐ जय..।5।।

जगमग-जगमग दीप जलाया, आरति करने को।।माता.....
करे ''सारिका'' यही कामना, आरत सब हर लो।।ॐ जय.....।।6।।